International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

भारत मे वर्तमान वैश्विक चुनौतियाँ और उभरते विमर्श:

डॉ॰ सरिता भारती, डॉ॰ विनोद कुमार

शोध छात्रा-हिन्दी, सहायक प्रोफेसर-वाणिज्य
(वी॰ एस॰ एस॰ डी॰ पी॰ जी॰ कालेज कानपुर, राजकीय महाविद्यालय हंसौर बाराबंकी)
(**saritabharti7@gmail.com, dr.vkvs343@gmail.com)**

सारांश

वर्तमान परिदृश्य में, भारत एक प्रमुख वैश्विक शक्ति के रूप में उभर रहा है, लेकिन उसे जटिल और बहुआयामी चुनौतियों का भी सामना करना पड़ रहा है। भारत को चीन तथा पाकिस्तान के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा पर तनावपूर्ण संबंधों और रूस-यूक्रेन युद्ध के बीच पश्चिमी देशों के दबाव के बावजूद अपने रणनीतिक हितों को संतुलित करना पड़ रहा है। बांग्लादेश और नेपाल जैसे पड़ोसियों में राजनीतिक बदलावों के कारण अपनी 'पड़ोसी पहले' नीति को नए सिरे से परिभाषित करना पड़ रहा है। वैश्विक अस्थिरता के कारण ऊर्जा सुरक्षा एक बड़ी चिंता है। इसके साथ ही, विकसित देशों में बढ़ रहे संरक्षणवाद के बीच अपनी निर्यात-आधारित अर्थव्यवस्था के लिए नए अवसर तलाशने पड़ रहे हैं। डिजिटलीकरण के साथ ही साइबर हमले, सूचना युद्ध और महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे पर खतरे बढ़ गए हैं। वर्तमान में भारत दुनिया की 9वीं सबसे अधिक जलवायु-प्रभावित अर्थव्यवस्था के रूप में, आपदा प्रबंधन और नवीकरणीय ऊर्जा की ओर संक्रमण के बीच एक कठिन चुनौती का सामना कर रहा है। साथ ही खुद को 'ग्लोबल साउथ' के नेता के रूप में स्थापित कर रहा है, जो विकासशील देशों की जरूरतों (गरीबी, बेरोजगारी, निरक्षरता, स्वास्थ्य सेवा, परिवहन विकास) को वैश्विक मंचों (**G**20, **BRICS)** पर उठा रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता, ड्रोन और ग्रीन हाइड्रोजन जैसी उभरती तकनीकों में अपनी क्षमता बढ़ा रहा है और इन तकनीकों के वैश्विक नियमों को आकार देने में भाग ले रहा है। भारत 'गुटनिरपेक्ष' के बजाय 'बहु-संलग्नता' पर जोर दे रहा है, जहां वह **QUAD** और **BRICS** दोनों में शामिल होकर स्वतंत्र निर्णय ले रहा है। वही इसके सामने प्रमुख वर्तमान वैश्विक चुनौतियाँ और उभरते विमर्श मे 'डिजिटल इंडिया' मॉडल, जिसमें यूपीआई (**UPI)** और आधार शामिल हैं, जो अन्य देशों के लिए एक मॉडल के रूप में पेश किया जा रहा है। वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधीकरण और 'मेक इन इंडिया' के माध्यम से विनिर्माण को आत्मनिर्भर बनाने का विमर्श प्रमुख है। आर्थिक विकास के बावजूद, युवाओं के लिए रोजगार के पर्याप्त अवसर पैदा करना एक प्रमुख घरेलू और वैश्विक चुनौती है। वर्तमान में, भारत का दृष्टिकोण 'संशोधन और संतुलन' पर केंद्रित है, जहाँ वह विगत वर्षों की अस्थिरता के बाद पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को फिर से मजबूत करने और वैश्विक शक्तियों के बीच संतुलन बनाए रखने का प्रयास कर रहा

है। समाज में आर्थिक खाई और नफरत के माहौल को कम करना, जिससे देश की आंतरिक स्थिरता बची रहे। भारत अपनी अपार पर्यटन क्षमता का पूरी तरह से दोहन करने में पिछड़ रहा है। इस शोध पत्र मे वर्तमान वैश्विक चुनौतियाँ और उभरते विमर्श मुख्य रूप से भू-राजनीति, अर्थव्यवस्था, पर्यटन एवं सांस्कृतिक क्षेत्र और सुरक्षा के इर्द-गिर्द केंद्रित हैं।

मुख्य शब्द- वर्तमान वैश्विक चुनौतियाँ और उभरते विमर्श (भू-राजनीति, अर्थव्यवस्था, पर्यटन एवं सांस्कृतिक क्षेत्र और सुरक्षा) .।

1° भारत मे वर्तमान वैश्विक स्थिति की संकल्पना एवं प्रस्तावना- वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में भारत को सबसे आशाजनक विकासशील देशों में से एक माना जाता है। यह शोध भारत द्वारा प्रदर्शित उभरती हुई शक्ति की वर्तमान स्थिति का विश्लेषण करने का लक्ष्य रखता है। इस संदर्भ में, "उभरती हुई शक्ति" शब्द की अवधारणा को स्पष्ट करने और वर्तमान अंतरराष्ट्रीय गतिशीलता में भारत के योगदान को ध्यान में रखते हुए, यह दर्शाने के लिए एक सैद्धांतिक चर्चा प्रस्तुत की गयी है कि भारत इस अवधारणा में कैसे समाहित हो सकता है। तथा भारत की आर्थिक विशेषताओं का मूल्यांकन प्रस्तुत किया गया और यह विश्लेषण किया गया कि भारत का विकास किस प्रकार यह दर्शाता है कि देश एक उभरती हुई शक्ति है। इस शोध के लिए चयनित विश्लेषणात्मक आधार पिछले दशकों में भारत के आर्थिक प्रदर्शन और वैश्विक मूल्य श्रृंखलाओं में इसके योगदान पर आधारित है। जिसके परिणामस्वरूप यह निष्कर्ष निकलता है कि भारत वर्तमान वैश्विक व्यवस्था में एक उभरती हुई शक्ति है।

वर्तमान में विश्व एक असंतुलन और दिशाहीनता का शिकार है। हम न तो द्विध्रुवीय शीत युद्ध की स्थिति में हैं और न ही एक बहुध्रुवीय व्यवस्था की ओर आगे बढ़ रहे हैं, बल्कि संपूर्ण विश्व धीरे-धीरे कई शक्ति केंद्रों में विभाजित होता जा रहा है। वैश्वीकरण से पीछे हटना और संरक्षणवाद, व्यापार का क्षेत्रीयकरण, शक्ति संतुलन का स्थानांतरण, चीन एवं अन्य शक्तियों का उदय और चीन-संयुक्त राज्य अमेरिका की रणनीतिक प्रतिद्वंद्विता, आण्विक प्रसार के मुद्दे, अतिवाद के कारण तथा प्रसार, संचार तंत्र, मीडिया की भूमिका तथा सामाजिक तंत्रीयता, साइबरसुरक्षा के आधार, आतंकवाद, भ्रष्टाचार, प्रतिविद्रोह तथा संगठित अपराध जैसे कारकों ने विश्व के भू-राजनीतिक और आर्थिक गुरुत्व केंद्रों को एशिया की ओर स्थानांतरित कर दिया है। राज्यों के बीच और उनके अंदर असमानता की स्थिति ने एक संकीर्ण राष्ट्रवाद और क्षेत्रवाद को जन्म दिया है। हम एक नए ध्रुवीकृत युग में प्रवेश कर रहे हैं और 'एंथ्रोपोसीन' युग के पारिस्थितिक संकटों का सामना कर रहे हैं, जहाँ जलवायु परिवर्तन एक अस्तित्वपरक खतरा बनता जा रहा है।

2. अध्ययन का उद्देश्य- इस शोध पत्र के अध्ययन का उद्देश्य निम्नलिखित है -

- भारत मे वर्तमान वैश्विक स्थिति की भूमिका का विस्तृत विश्लेषण किया गया है।

- भारत मे वर्तमान वैश्विक चुनौतियों का विभिन्न क्षेत्रों (राजनीतिक क्षेत्र, आर्थिक क्षेत्र, सामाजिक क्षेत्र, पर्यटन एवं सांस्कृतिक क्षेत्र) मे विस्तृत अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है।
- भारत मे वर्तमान वैश्विकता के सापेक्ष्य उभरते विमर्श का विस्तृत अध्ययन एवं विश्लेषण किया गया है।

3. **साहित्यावलोकन**- किसी भी शोध कार्य को करने के लिए पहले शोध से सम्बन्धित अनेक पुस्तकों, लेखों का अध्ययन करना अतिआवश्यक है, जिसमें अनेक पुस्तकों, पत्र-पत्रिकाओं का अध्ययन करना आवश्यक समझा गया तथा कम्प्यूटर के माध्यम से ऑनलाइन वेबसाइट का भी अध्ययन किया गया है। इसमें विशेष रूप से डॉ बी एल फड़िया की पुस्तक भारत मे लोक प्रशासन, डॉ अतुल लोहिया के भारतीय प्रशासनिक सेवा के नोट्स, डॉ. एस. के. मिश्र की पुस्तक- भारतीय सुरक्षा एवं विदेश नीति, डॉ. सतीश सिंह की पुस्तक- पड़ोस से रहेंगे बेहतर संबंध, धनंजय त्रिपाठी की पुस्तक- जंग तो नहीं चाहेगा चीन, हर्ष वी. पन्त की पुस्तक- नये तेवर वाली विदेश नीति, पुष्पेश पन्त की पुस्तक- भारत की विदेश नीति, अनिल अग्रवाल-वैश्वीकरण का सामाजिक प्रभाव, परीक्षा मंथन के हिन्दी निबंध, योजना, कुरुक्षेत्र एवं उपलब्ध साहित्य एवं अध्ययन की निरन्तरता की दिशा में प्रस्तुत शोध पत्र एक गम्भीर एवं सारगर्भित प्रयास है।

4. **वर्तमान वैश्विक चुनौतियाँ** - भारत मे वर्तमान वैश्विक चुनौतियों का विभिन्न क्षेत्रों निम्नलिखित है-

अ) भू-राजनीतिक तनाव और चीन-रूस के साथ संतुलन: भारत को चीन के साथ वास्तविक नियंत्रण रेखा पर तनावपूर्ण संबंधों और रूस-यूक्रेन युद्ध के बीच पश्चिमी देशों के दबाव के बावजूद अपने रणनीतिक हितों को संतुलित करना पड़ रहा है। चीन एकमात्र ऐसा प्रमुख देश था, जिसने वर्ष 2020 के अंत में सकारात्मक विकास दर दर्ज की थी और इसकी अर्थव्यवस्था वर्ष 2021 में और तेज़ी से विकास करने की ओर अग्रसर है। सैन्य रूप से, चीन ने स्वयं को और मज़बूत कर लिया है और अपने तीसरे विमानवाहक पोत के प्रक्षेपण की घोषणा के साथ हिंद-प्रशांत महासागर क्षेत्र पर अपना दबदबा बढ़ाने का प्रयास किया है। इस परिप्रेक्ष्य में, चीन-भारत संबंधों में किसी बड़े सुधार की संभावना नहीं है और भारतीय एवं चीनी सशस्त्र बलों के बीच टकराव जारी रहने का अनुमान है। रूस, क्षेत्रीय मामलों में अधिकाधिक रुचि प्रदर्शित करने लगा है। इसके अलावा वर्ष 2014 में क्रीमिया के कब्ज़े के बाद रूस पर लगाए गए प्रतिबंधों ने रूस को चीन के निकट ला दिया है। इससे भारत जैसे देशों में उसकी रुचि कम होने का संकेत भी मिलता है। इसके साथ ही, अमेरिका के साथ भारत की निकटता ने भी रूस और ईरान जैसे पारंपरिक मित्रों के साथ भारत के संबंधों को कमज़ोर कर दिया है। भारतीय विदेश नीति के लिये एक अधिक चिंताजनक विषय पड़ोसी देशों के साथ कमज़ोर होते संबंध भी है। इसे श्रीलंका के साथ चीन की 'चेक बुक डिप्लोमेसी', **NRC** के मुद्दे पर बांग्लादेश के साथ तनाव और नए नक्शे

के जारी होने के कारण नेपाल के साथ हालिया सीमा विवाद जैसे उदाहरणों से समझा जा सकता है।

ब) दक्षिण एशिया में स्थिरता: बांग्लादेश और नेपाल जैसे पड़ोसियों में राजनीतिक बदलावों के कारण भारत को अपनी 'पड़ोसी पहले' नीति को नए सिरे से परिभाषित करना पड़ रहा है। इज़राइल और चार अरब देशों- संयुक्त अरब अमीरात, बहरीन, मोरक्को और सूडान के बीच अमेरिका की मध्यस्थता से बना तालमेल इस क्षेत्र में बदलते परिदृश्य को प्रतिबिंबित करता है। हालाँकि, अब्राहम समझौते को लेकर व्यक्त अति-उत्साह के बावजूद वास्तविक स्थिति अस्थिर ही बनी हुई है और अभी भी ईरान एवं इज़राइल के बीच टकराव का जोखिम बना हुआ है। इस भू-भाग की रणनीतिक परिवर्तनशीलता ईरान को अपनी स्थिति मज़बूत करने हेतु अपनी परमाणु क्षमता का उपयोग करने के लिये प्रेरित कर सकता है। यह भारत के लिये समस्याजनक है, क्योंकि उसके दोनों देशों के साथ संबंध हैं।

स) ऊर्जा सुरक्षा और व्यापार संरक्षणवाद: वैश्विक अस्थिरता के कारण ऊर्जा सुरक्षा एक बड़ी चिंता है। इसके साथ ही, विकसित देशों में बढ़ रहे संरक्षणवाद के बीच भारत को अपनी निर्यात-आधारित अर्थव्यवस्था के लिए नए अवसर तलाशने पड़ रहे हैं। वर्तमान में भारत दो महत्त्वपूर्ण 'सुपरनेशनल' निकायों-गुटनिरपेक्ष आंदोलन और दक्षिण एशियाई क्षेत्रीय सहयोग संघ से अलग-थलग बना हुआ है, जिनके वह संस्थापक सदस्य रहा था। इसके अलावा, भारत ने क्षेत्रीय व्यापक आर्थिक भागीदारी से भी बाहर रहने का विकल्प चुना है। यह 'सेल्फ आइसोलेशन' वैश्विक शक्ति बनने की भारत की आकांक्षा के साथ सुसंगत नहीं है।

द) साइबर और हाइब्रिड खतरे: पूरे विश्व को साइबर संसार ने एक अंतर्राष्ट्रीय गाँव (**Global village**) के रूप मे बदल दिया है। लोंगों की इंटरनेट पर बढ़ती निर्भरता समय-समय पर गम्भीर खतरों मे डाल देती है। डिजिटलीकरण के साथ ही साइबर हमले मे वायरसों की सहायता से वेबसाइटें ठप कर दी जाती है। सरकार एवं उद्योग जगत को पंगु करने का प्रयास किया जाता है। इस युद्ध से बचाव हेतु कई देशों जैसे चीन ने वेबसाइट्स ब्लॉक करने, साइबर कैफों मे गस्त लगाने, मोबाइल फोन के प्रयोग पर निगरानी रखने और इंटरनेट गतिविधियों पर नजर रखने के लिए हजारों संख्या मे साइबर पुलिस तैनात कर रखी है साइबर वार मे तकनीकि उपकरणो से अवसंरचना को भी भारी हानि होती है। एक कुशल योद्धा किसी भी देश की विद्धुत ग्रिडों में हैकिंग के द्वारा घुसकर अत्यधिक हानि पाहुचा सकता है। उत्पाद, अधि प्रचार (प्रोपेगंडा), आकडा सग्रहण, उपकरण नष्ट करना, सूचना युद्ध और महत्वपूर्ण बुनियादी ढांचे पर खतरे बढ़ गए हैं।

य) जलवायु परिवर्तन और संसाधन संघर्ष: 2026 में भारत दुनिया की 9वीं सबसे अधिक जलवायु-प्रभावित अर्थव्यवस्था के रूप में, आपदा प्रबंधन और नवीकरणीय ऊर्जा की ओर संक्रमण के बीच एक कठिन चुनौती का

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

सामना कर रहा है। जल, वायु और वन संकट भारत की पर्यावरणीय चुनौतियाँ भयावह हैं। जल संकट में देश तेरहवें स्थान पर है, वायु प्रदूषण के कारण असमय मृत्यु दर में वृद्धि हुई है, और वैश्विक स्तर पर वनों की कटाई की दर में दूसरे स्थान पर है। 2022 में, भारत वैश्विक स्तर पर तीसरा सबसे बड़ा कार्बन उत्सर्जक भी बन गया है, जो इसके सामने मौजूद चुनौतियों के दूरगामी प्रभावों को और भी बढ़ा देता है।

र) युवा बेरोजगारी: आर्थिक विकास के बावजूद, युवाओं के लिए रोजगार के पर्याप्त अवसर पैदा करना एक प्रमुख घरेलू और वैश्विक चुनौती है। भारत की आर्थिक और सैन्य शक्ति को बढ़ाने में देश की विशाल आबादी (भारत पूरी दुनिया में सबसे अधिक आबादी वाला दूसरा देश है और 2030 तक सबसे अधिक आबादी वाला पहला देश हो जाएगा) और विशाल आकार वाला देश बन जाएगा. इसके कारण मौजूदा वैश्विक रैंकिंग को बनाये रखने और उसमें सुधार लाना संभव हो जाएगा. खास तौर पर जहाँ तक जनसांख्यिकी का संबंध है, भारत अमरीका और चीन की तुलना में कहीं अधिक युवा देश है. इससे यह स्पष्ट होता है कि इसके पास श्रमिकों की इतनी बड़ी तादाद है कि यह कई दशकों तक अपने आर्थिक और सैन्य कौशल को बरकरार रख सकता है. लेकिन ऐसी जनसांख्यिकीय ताकत से संभावित लाभ इसके अविकसित संसाधनों की वजह से कम हो जाता है. ऐसी विशाल और युवा आबादी का भविष्य में पूरा लाभ तभी मिल सकता है जब उन्हें शिक्षित किया जाए और उनके स्वास्थ्य का पूरा ख्याल रखा जाए. व्यापक अर्थों में भारत को अपनी वयोवृद्ध आबादी का ख्याल रखने के लिए उनके लिए आवास की सुविधाएँ बढ़ानी होंगी और पेंशन प्रणाली को मज़बूत करना होगा. भले ही भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है, लेकिन यह अपने अल्पसंख्यकों, निचली जातियों और महिलाओं के अधिकारों को पूरी तरह से संरक्षण नहीं दे पा रहा है. साथ ही मानवाधिकारों के उल्लंघन और भ्रष्टाचार रोकने वाली संस्थाओं को और साथ ही धर्मनिरपेक्ष ताकतों को मज़बूती प्रदान करने में भी विफल रहा है.

ल) सामाजिक असमानता: समाज में आर्थिक खाई और नफरत के माहौल को कम करना, जिससे देश की आंतरिक स्थिरता बची रहे। वैश्विक अनिश्चितताओं से बचाव और चीन पर निर्भरता कम करने के लिए यूरोप भारत के साथ अपनी साझेदारी को मजबूत कर रहा है, ऐसे में उसे भारत की आंतरिक विकास प्रक्रियाओं को समझना आवश्यक है। एक ही रणनीति अपनाने से क्षेत्रीय असमानताओं को नजरअंदाज करने का खतरा है। इसके बजाय, क्षेत्रीय जानकारी पर आधारित रणनीति से यूरोप भारत के औद्योगिक परिवर्तन में सहयोग करते हुए अपने आर्थिक और भू-राजनीतिक हितों को भी आगे बढ़ा सकेगा।। बिहार अल्पविकास, खराब बुनियादी ढांचे और लगातार गरीबी से जूझ रहा है। गुजरात पूंजी-प्रधान औद्योगिक विकास पर फल-फूल रहा है, लेकिन बढ़ती असमानताओं का सामना कर रहा है। तमिलनाडु मानव पूंजी निवेश को प्राथमिकता देता है और समावेशी, उच्च-तकनीकी आधारित

विकास को बढ़ावा देता है। ये क्षेत्र व्यापक रुझानों को प्रतिबिंबित करते हैं – उत्तर का आर्थिक पिछड़ापन, पश्चिम की औद्योगिक गतिशीलता और दक्षिण की सामाजिक प्रगति।

व) पर्यटन का दोहन: भारत अपनी अपार पर्यटन क्षमता का पूरी तरह से दोहन करने में पिछड़ रहा है। पर्यटन का दोहन अनियंत्रित विकास, पर्यावरणीय क्षति, और संसाधनों पर अत्यधिक दबाव से जुड़ा है। अत्यधिक भीड़भाड़ के कारण पारिस्थितिक तंत्र नष्ट हो रहे हैं, जैसे हिमालयी क्षेत्रों में भूस्खलन और जल संकट। यह स्थानीय संस्कृति को कमोडिटी (वस्तु) बना देता है और अपशिष्ट/प्रदूषण बढ़ाता है, जिससे दीर्घकालिक स्थिरता को खतरा है। लोकप्रिय पर्यटन स्थलों पर धारण क्षमता से अधिक भीड़भाड़ के कारण प्राकृतिक संसाधनों पर दबाव, प्रदूषण, प्लास्टिक कचरा और प्रवाल भित्तियों को नुकसान पहुँचता है। जल और ऊर्जा की अत्यधिक मांग स्थानीय निवासियों के लिए कमी पैदा करती है। पारंपरिक जीवन शैली, रीति-रिवाजों और संस्कृति का व्यावसायीकरण हो रहा है, जिससे उनकी मौलिकता खो रही है। स्थानीय समुदाय पर कम वेतन वाली मौसमी नौकरियों की निर्भरता बढ़ती है, साथ ही पर्यटन स्थलों पर जीवन यापन की लागत बढ़ जाती है। विकासशील क्षेत्रों में पर्यटन की वृद्धि के साथ ही महिलाओं और बच्चों के यौन शोषण के मामलों में भी वृद्धि देखी गई है। इन नकारात्मक प्रभावों को कम करने के लिए टिकाऊ पर्यटन और प्रबंधन की आवश्यकता है ताकि प्रकृति और संस्कृति का संरक्षण हो सके।

5. भारत मे वर्तमान वैश्विकता के सापेक्ष्य उभरते विमर्श

1990 के दशक में शीत युद्ध की समाप्ति ने अंतरराष्ट्रीय व्यवस्था में शक्ति वितरण की नई व्यवस्था को लेकर बहस छेड़ दी। द्विध्रुवीय वैश्विक व्यवस्था का पतन हुआ, जिसमें वैश्विक वर्चस्व के लिए प्रतिस्पर्धा करने वाले केवल दो शक्ति केंद्र थे। इसके परिणामस्वरूप कई शक्ति केंद्र उभरे, जो शक्ति के विभिन्न स्तरों को प्रदर्शित करते हुए इस अभूतपूर्व वैश्विक व्यवस्था में एक नवीन गतिशीलता के तहत एक-दूसरे के साथ परस्पर क्रिया कर रहे थे। इस अर्थ में, यद्यपि विशिष्ट केंद्रों में शक्ति का संकेंद्रण देखा जा सकता है, राष्ट्रों के बीच आर्थिक और भू-राजनीतिक संबंधों के पुनर्गठन ने नए ध्रुवों की बढ़ती भागीदारी की संभावना को दर्शाया है, जो विश्व उत्पादन और आर्थिक प्रवाह के संदर्भ में परिधीय क्षेत्रों में स्थित हैं और मध्यम स्तर की शक्ति प्रदर्शित करते हैं। 2000 के दशक की शुरुआत में आर्थिक, राजनीतिक और सामाजिक पहलुओं के संयोजन के परिणाम स्वरूप "उभरती शक्ति" और "उभरती शक्ति" के वर्गीकरण का प्रसार हुआ।

अ) ग्लोबल साउथ (Global South) की आवाज: यह उन देशों को संदर्भित करता है जो आमतौर पर आर्थिक रूप से कम विकसित या विकासशील हैं और जिन्हें ऐतिहासिक रूप से उपनिवेशवाद का सामना करना पड़ा है। ये देश साझा चुनौतियों जैसे गरीबी,खाद्य और ऊर्जा सुरक्षा, ऋण संकट, जलवायु परिवर्तन का असंगत असर, और डिजिटल अंतर का सामना कर रहे हैं।

International Journal for Research Trends in Social Science & Humanities
Volume 4, Issue 2
Mar-Apr 2026, PP 1-9

वर्तमान भू-राजनीति में विकासशील देशों (एशिया, अफ्रीका और लैटिन अमेरिका) के समूह के साझा हितों, चुनौतियों और आकांक्षाओं को वैश्विक मंचों पर रखने की एक प्रमुख पहल है। भारत ने 2023 से 'वॉयस ऑफ ग्लोबल साउथ समिट' आयोजित करके इन देशों को एक साझा मंच प्रदान किया है, जहाँ वे अपनी समस्याओं और समाधानों पर चर्चा करते हैं। 3**rd Voice of Global South Summit** (अगस्त 2024) की थीम "एक सशक्त ग्लोबल साउथ, एक टिकाऊ भविष्य के लिए" थी। भारत 'आरोग्य मैत्री' के माध्यम से आपदाओं में सहायता, डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचे को साझा करना और विकासात्मक ज्ञान का आदान-प्रदान कर रहा है। ग्लोबल साउथ का प्रमुख मुद्दा संयुक्त राष्ट्र , **IMF** और विश्व बैंक जैसे अंतरराष्ट्रीय संस्थानों में बेहतर प्रतिनिधित्व और निर्णयों में हिस्सेदारी है। भारत की **G**20 अध्यक्षता (2023) के दौरान अफ्रीकी संघ को स्थायी सदस्य बनाना, भारत के ग्लोबल साउथ के प्रति प्रतिबद्धता का एक बड़ा उदाहरण है।भारत खुद को 'ग्लोबल साउथ' के नेता के रूप में स्थापित कर रहा है, जो विकासशील देशों की जरूरतों (गरीबी, स्वास्थ्य, विकास) को वैश्विक मंचों (**G**20, **BRICS)** पर उठा रहा है।

ब) तकनीकी कूटनीति और एआई (AI) **गवर्नेंस**: भारत 'डिजिटल महासागर' और साझा डिजिटल सार्वजनिक वस्तुओं के माध्यम से ग्लोबल साउथ (विकासशील देशों) के लिए सुरक्षित और समावेशी **AI** नीतियों को बढ़ावा दे रहा है। 'इंडिया एआई इम्पैक्ट समिट 2026' में घोषित दिशानिर्देश, विश्वास, इक्विटी, जवाबदेही और निष्पक्षता पर आधारित हैं, जो एक पारदर्शी विनियामक ढांचा तैयार करते हैं। भारत ने एक संतुलित, जोखिम-आनुपातिक दृष्टिकोण अपनाया है, जहाँ नियमों की सख्ती **AI** प्रणाली के जोखिम स्तर के अनुसार अलग-अलग होती है। सरकार ने 38,000 जीपीयू की क्षमता हासिल की है, जो स्वदेशी **AI** मॉडल विकास, डेटा सुरक्षा और घरेलू कंप्यूटिंग क्षमता को मजबूत कर रहा है। राजनयिक अब **AI** का उपयोग डेटा विश्लेषण, भाषाई बाधाओं को दूर करने और वार्ता को मजबूत करने के लिए कर रहे हैं, जो उनके टूलकिट में शामिल हो गया है। 2026 तक, भारत का फोकस स्वदेशी **AI** नवाचार के साथ-साथ नैतिक **AI** शासन (**Ethical Governance)** सुनिश्चित करके वैश्विक स्तर पर एक संतुलित नियामक शक्ति के रूप में उभरना है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता (**AI)**, ड्रोन और ग्रीन हाइड्रोजन जैसी उभरती तकनीकों में भारत अपनी क्षमता बढ़ा रहा है और इन तकनीकों के वैश्विक नियमों को आकार देने में भाग ले रहा है।

स) रणनीतिक स्वायत्तता: किसी राष्ट्र की अपनी विदेश और रक्षा नीति को बिना किसी बाहरी दबाव या गठबंधन की बाध्यता के स्वतंत्र रूप से तय करने की क्षमता है। यह राष्ट्रीय हितों को प्राथमिकता देते हुए कई शक्तियों के साथ संतुलन बनाए रखने (जैसे गुटनिरपेक्षता से 'बहु-संरेखण'**)** का एक लचीला तरीका है। यह तटस्थता या अलगाव नहीं, बल्कि अपनी शर्तों पर संप्रभु फैसले लेने की क्षमता है। भारत जैसे देश रूस (रक्षा आपूर्ति) और अमेरिका (सुरक्षा सहयोग) दोनों के साथ, अपनी सुविधा के अनुसार

संबंध रखते हैं। **EU** के लिए इसका अर्थ रक्षा और तकनीकी क्षेत्रों में बाहरी निर्भरता कम करना है। वैश्विक अंतर्संबंधों और महाशक्ति प्रतिद्वंद्विता (जैसे अमेरिका-चीन) के बीच संतुलन बनाना कठिन होता जा रहा है, जिससे **"Swing State" (**झूलता हुआ राज्य) जैसी चर्चाएं होती हैं। भारत ऐतिहासिक रूप से गुटनिरपेक्षता से लेकर अब 'बहु-संरेखण' तक, अपनी सामरिक स्वायत्तता को बनाए रखने पर जोर देता है। इसका लक्ष्य एक बहुध्रुवीय विश्व में अपनी संप्रभुता की रक्षा करना है भारत 'गुटनिरपेक्ष' के बजाय 'बहु-संलग्नता' पर जोर दे रहा है, जहां वह **QUAD (**अमेरिका के साथ) और **BRICS (**रूस-चीन के साथ) दोनों में शामिल होकर स्वतंत्र निर्णय ले रहा है।

द) डिजिटल सार्वजनिक बुनियादी ढांचा: भारत का 'डिजिटल इंडिया' मॉडल, जिसमें यूपीआई (**UPI)** और आधार शामिल हैं, को अन्य देशों के लिए एक मॉडल के रूप में पेश किया जा रहा है। 2014 में शुरू किए गए "मेक इन इंडिया" कार्यक्रम का उल्लेख किया जा सकता है, जिसका प्राथमिक उद्देश्य देश को वैश्विक स्तर पर एक प्रमुख उत्पादन केंद्र में बदलना और भारतीय अर्थव्यवस्था में घरेलू और बहुराष्ट्रीय कंपनियों की गतिविधियों को प्रोत्साहित करना था। इस पहल का लक्ष्य 2020 तक सकल घरेलू उत्पाद में विनिर्माण क्षेत्र के योगदान को 25% तक बढ़ाना था, जो इस पहल के शुभारंभ वर्ष में दर्ज किए गए संकेतकों की तुलना में 16% की वृद्धि दर्शाता है। इस प्रकार, इसके कार्यान्वयन के बाद से, मेक इन इंडिया कार्यक्रम ने प्रत्यक्ष विदेशी निवेश को बढ़ावा दिया है, जिससे 2014 और 2016 के बीच एफडीआई प्रवाह में 55% की वृद्धि हुई है। साथ ही, बौद्धिक संपदा अधिकारों के लिए एक न्यायिक तंत्र का गठन किया गया, जिसके परिणामस्वरूप भारत विश्व के 57वें सबसे नवोन्मेषी देश के स्तर पर पहुंच गया। अंत में, देश के उत्पादन संबंधी बुनियादी ढांचे में सुधार और उन्नयन को बढ़ावा दिया गया और वर्तमान औद्योगिक क्षेत्र के विकास की प्रक्रिया को तेज किया गया।

य) आर्थिक सुरक्षा: वैश्विक आपूर्ति श्रृंखलाओं में विविधीकरण और 'मेक इन इंडिया' के माध्यम से विनिर्माण को आत्मनिर्भर बनाने का विमर्श प्रमुख है। 'आत्मनिर्भरता' का महत्त्व, विदेशों में अपनी भूमिका और प्रभाव सुनिश्चित करने के लिये भारत कई कदम उठा सकता है, जो भारत के विकास में मददगार हो सकते हैं। आर्थिक नीति को राजनीतिक और रणनीतिक संलग्नता से सुमेलित किया जाना चाहिये। वैश्वीकरण की भारत के विकास में केंद्रीय भूमिका रही है। भारत के लिये एक अधिक सक्रिय क्षेत्रीय और अंतर्राष्ट्रीय भूमिका वैश्विक अर्थव्यवस्था के हाशिये पर रहकर नहीं पाई जा सकती। वर्तमान विश्व में आत्मनिर्भरता के लक्ष्य को वैश्विक अर्थव्यवस्था का अंग होकर ही साकार किया जा सकता है। हमें चीन की नकल नहीं करनी चाहिये, जहाँ एक सभ्यतागत देश होने और 'विक्टिम' होने के दावे के साथ आगे बढ़ा जा रहा है। इसके बजाय हमें अपनी स्वयं की शक्ति और ऐतिहासिक राष्ट्रीय पहचान की पुष्टि करनी चाहिये।

र) अनिश्चितता और लगातार बदलता: भू-राजनीतिक माहौल स्पष्ट रूप से भारतीय नीति के लिये उल्लेखनीय चुनौतियाँ उत्पन्न करते हैं, यहीं भारत के लिये कुछ अवसर भी उपलब्ध हैं, जो भारत के रणनीतिक विकल्पों एवं कुटनीतिक अवसरों के दायरे का विस्तार कर सकते है, यदि हम विशेष रूप से भारतीय उप-महाद्वीप में आंतरिक और बाह्य रूप से अपनी नीतियों को समायोजित कर सकें। भारत को एशिया में बहुध्रुवीयता की स्थापना का लक्ष्य रखना चाहिये।

ल) विषय-आधारित गठबंधन: भारत को बदलती परिस्थितियों के साथ तालमेल बिठाना होगा। इस अनिश्चित और अधिक अस्थिर दुनिया से संबद्ध होने के अलावा उसके पास अन्य कोई विकल्प नहीं है। ऐसा करने का एक बेहतर तरीका विषय-आधारित गठबंधन की स्थापना करना है, जहाँ विभिन्न अभिकर्त्ता शामिल होंगे और उनकी संलग्नता उनकी रुचि और क्षमता पर निर्भर होगी।

व) अमेरिका के साथ बढ़ती सुरक्षा संगति: भारत के विकास के लिये आवश्यक क्षेत्रों जैसे- ऊर्जा, व्यापार, निवेश, शिक्षा और स्वास्थ्य आदि में सहयोग के लिये भी महत्त्वपूर्ण हो सकती है। इसके अतिरिक्त, जलवायु परिवर्तन एवं ऊर्जा, नवीकरणीय ऊर्जा के लिये तकनीकी समाधान एवं डिजिटल सहयोग जैसे अन्य क्षेत्रों में भारत और अमेरिका आपसी सहयोग बढ़ा सकते हैं।

श) 'सार्क' को पुनर्जीवित करना: भारत इस उपमहाद्वीप और हिंद महासागर क्षेत्र में पड़ोसी देशों के लिये समृद्धि और सुरक्षा दोनों का प्राथमिक स्रोत बन सकता है। पड़ोसी देशों के प्रति भारत की नीति के अत्यधिक प्रतिभूतिकरण ने व्यापार को भूमिगत कर दिया है, साथ ही इसने देश की सीमाओं का अपराधीकरण किया है और पूर्वोत्तर भारत में चीनी सामानों के व्यापक प्रवेश को सक्षम कर दिया है जो स्थानीय उद्योगों को नष्ट कर रहे हैं। चीन पर निर्भरता कम करते और बाहरी संतुलन की तलाश करते हुए भारत के प्राथमिक प्रयास 'आत्मनिर्भरता' पर केंद्रित होने चाहिये। यदि कोई एक देश है जो अपने आकार, जनसंख्या, आर्थिक क्षमता, वैज्ञानिक एवं तकनीकी क्षमताओं के मामले में चीन से बराबरी कर सकता है या उससे भी आगे निकल सकता है, तो वह भारत ही है।

६. भारत मे वर्तमान वैश्विक स्थिति के सापेक्ष्य सुधारात्मक उपाय

वर्तमान वैश्विक भू-राजनीतिक और आर्थिक अनिश्चितताओं (जैसे संघर्ष और सुस्ती) के बीच भारत के लिए सुधारात्मक उपाय घरेलू आत्मनिर्भरता, तकनीकी विकास, और रणनीतिक कूटनीति पर केंद्रित हैं। मुख्य कदमों में डिजिटल अवसंरचना (**UPI**) को मजबूत करना, विनिर्माण को बढ़ावा (**PLI** स्कीम), शिक्षा-कौशल विकास, और 'ग्लोबल साउथ' (विकासशील देशों) की आवाज़ बनना शामिल है ताकि रणनीतिक स्वायत्तता सुनिश्चित हो सके।

अ) साइबर अटैक रोकने के उपाय- साइबर सुरक्षा योजना, आतंकवाद प्रवण क्षेत्रों की पहचान करना,साइबर सेल की अवस्थापना, सोशल मीडिया पर गहन

निगरानी रखना, लोगों को नियोजित सोशल मीडिया अपराधों के प्रति जागरूक करना, **CERT-in** स्पेशल टास्क फोर्स का निर्माण करना ताकि साइबर अपराध मे कमी आ सके, हमेशा जब भी साफ्टवेयर प्रयोग मे लाया जाय तो वो असली व पंजीकृत होना चाहिए, क्योकि पंजीकृत साफ्टवेयर मे डाटा चोरी का खतरा कम होता है, एंटीवायरस व एंटमलवेयर का हमेशा पंजीकृत वर्जन का ही प्रयोग किया जाना चाहिए। ई-मेल व कंप्यूटर फाइलों को हमेशा मजबूत पासवर्ड डालकर सुरक्षित रखें। डाटा को इनक्रिप्टेड माध्यम से प्रयोग मे लाया जाए तथा सरकार को इससे निपटने हेतु साइबर सुरक्षा एजेंसियों की स्थापना करती है ताकि देश मे होने वाले साइबर आक्रमण से बचा जा सके।

ब) हिन्द महासागर की सुरक्षा के उपाय- हिन्द महासागर में भारत के 247 द्वीप, 200 बन्दरगाह, तीन महानगर तथा कई औद्योगिक और नाभिकीय प्रतिष्ठान है जिससे भारत ने खुद को (**Indian Ocean Region)** में एक प्रमुख सुरक्षा प्रदाता के रूप में स्थापित किया है। सागर 'क्षेत्र में सभी के लिए सुरक्षा और विकास' की नीति के तहत पड़ोसी देशों के साथ मिलकर समुद्री सुरक्षा को बढ़ावा देना। सामरिक सहयोग और गठबंधन द्वारा अमेरिका, जापान, ऑस्ट्रेलिया के साथ रक्षा सहयोग को मजबूत करना और समुद्री सुरक्षा के लिए सूचना संलयन केंद्र, हिंद महासागर क्षेत्र के माध्यम से जानकारी साझा करना। नौसैनिक और सैन्य क्षमता विस्तार हेतु पनडुब्बी रोधी युद्ध प्रणालियों को मजबूत करना, निगरानी नेटवर्क (राडार, उपग्रह) बढ़ाना और गश्ती विमानों की संख्या बढ़ाना। क्षमता निर्माण और प्रशिक्षण से मॉरीशस, मालदीव, सेशेल्स जैसे द्वीपीय देशों को तटीय रडार नेटवर्क, गश्ती पोत और मानवीय सहायता प्रदान करना एवं समुद्री डकैती, नशीली दवाओं की तस्करी, अवैध मछली पकड़ने और समुद्री आतंकवाद से निपटने के लिए तटरक्षक बलों का समन्वय। नीली अर्थव्यवस्था को बढ़ावा के लिए सतत मछली पालन और समुद्री संसाधनों के जिम्मेदार उपयोग के माध्यम से समुद्री स्थिरता सुनिश्चित करना। चीन के बढ़ते प्रभाव का मुकाबला के लिए डोकलाम और अन्य रणनीतिक बंदरगाहों (जैसे चाबहार, सबांग, दुकम) में निवेश के माध्यम से चीनी नौसेना की गतिविधियों की निगरानी करना। इन उपायों का मुख्य उद्देश्य हिंद महासागर को सुरक्षित, मुक्त और समावेशी (**Free and Open)** बनाए रखना है।

स) आर्थिक और संरचनात्मक सुधार: डिजिटल और बुनियादी ढांचा: से **UPI** जैसे डिजिटल पब्लिक इंफ्रास्ट्रक्चर को वैश्विक स्तर पर फैलाना। 2035 तक निवेश/**GDP** अनुपात को 40% तक ले जाने के लिए अवसंरचना पर ध्यान केंद्रित करना। विनिर्माण मे **PLI (**प्रोडक्शन लिंक्ड इंसेंटिव) योजनाओं को तेज करना और ऑटोमोटिव, फार्मा जैसे क्षेत्रों को वैश्विक आपूर्ति श्रृंखला में शामिल करना। **GST** और कर सुधार का सरलीकरण और अनुपालन को आसान बनाना ताकि राजकोषीय घाटा कम हो सके। कानूनी और प्रशासनिक सुधार के लिए पुरानी पड़ चुकी कानूनों (जन विश्वास 2.0) को हटाकर ईज ऑफ डूइंग बिजनेस को बढ़ावा देना।

द) रणनीतिक विदेश नीति: रणनीतिक स्वायत्तता: में गुटनिरपेक्षता के बजाय 'बहु-संरेखण' अपनाना, जो राष्ट्रहित के अनुसार अलग-अलग महाशक्तियों से साझेदारी करे। तथा ग्लोबल साउथ का नेतृत्व: के द्वारा भारत-अफ्रीका, एशिया और लैटिन अमेरिका के साथ सहयोग बढ़ाकर स्वयं को विकासशील दुनिया के प्रमुख प्रतिनिधि के रूप में स्थापित करना एवं सुरक्षा और स्थिरता: हेतु इंडो-पैसिफिक में सक्रिय भागीदारी और क्वाड (**Quad**) के माध्यम से नियम-आधारित व्यवस्था का समर्थन।

य) सामाजिक और कौशल विकास: मानव पूंजी द्वारा जनसांख्यिकीय लाभांश का लाभ उठाने के लिए शिक्षा, कौशल विकास और स्वास्थ्य (आयुष्मान भारत) में निवेश हेतु कार्यबल लचीलापन, उद्योग-अनुकूल कौशल विकास और स्वचालन का उपयोग होगा।

र) ऊर्जा और तकनीक: हरित ऊर्जा के द्वारा अंतर्राष्ट्रीय सौर गठबंधन के माध्यम से टिकाऊ विकास और ऊर्जा सुरक्षा को प्राथमिकता तथा तकनीकी संप्रभुता हेतु रक्षा, **AI** और महत्वपूर्ण खनिजों में घरेलू क्षमता का विकास। इन सुधारात्मक उपायों का उद्देश्य भारत को केवल एक बाजार के रूप में नहीं, बल्कि एक विनिर्माण और नवाचार केंद्र के रूप में स्थापित करना है, जो वैश्विक झटकों के प्रति लचीला हो।

7. निष्कर्ष

उपरोक्त विश्लेषण से यह स्पष्ट है कि 2026 में, भारत का दृष्टिकोण 'संशोधन और संतुलन' (**Repair and Balance**) पर केंद्रित है, जहाँ वह 2025 की अस्थिरता के बाद पड़ोसी देशों के साथ संबंधों को फिर से मजबूत करने और वैश्विक शक्तियों के बीच संतुलन बनाए रखने का प्रयास कर रहा है। वहीं 'ग्लोबल साउथ की आवाज' का अर्थ यह सुनिश्चित करना है कि विकासशील देशों की चिंताएं वैश्विक एजेंडे में पीछे न छूट जाएं, और भारत इस चर्चा के केंद्र में एक "पुल" (**Bridge**) के रूप में कार्य कर रहा है। तकनीकी कूटनीति और **AI** गवर्नेंस भारत के लिए 2026 में अत्यंत महत्वपूर्ण हैं, जो विश्वास, सुरक्षा और समानता पर केंद्रित हैं। सरकार **'India AI Mission'** के तहत जिम्मेदार, मानवकेंद्रित **AI** नियमन को बढ़ावा दे रही है, जिसका उद्देश्य 38,000+ **GPU** कंप्यूटिंग क्षमता के साथ वैश्विक नेता बनना है। इसमें डेटा संप्रभुता और **AI**-आधारित कूटनीति प्रमुख है। भारत वर्तमान में भू-राजनीतिक और आर्थिक अनिश्चितता के दौर में एक महत्वपूर्ण 'पुल' की भूमिका निभा रहा है। चुनौतियों के बावजूद, अपनी मजबूत अर्थव्यवस्था, कूटनीतिक संतुलन और डिजिटल क्षमताओं के कारण भारत वैश्विक व्यवस्था में अपनी उचित जगह हासिल करने की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। भविष्य में, घरेलू सामाजिक-आर्थिक सुधार और तकनीकी नवाचार को बनाए रखना ही भारत की "वैश्विक शक्ति" बनने की यात्रा को परिभाषित करेगा।

संदर्भ ग्रंथ

1. अनिल अग्रवाल, **भारत विज्ञान में वैश्विक शक्ति क्यों नहीं**, परीक्षा मंथन, सम्मिलित राज्य/प्रवर अधीनस्थ सेवा मुख्य परीक्षा 2015, पेज संख्या 67-78 (2016)।
2. अनिल अग्रवाल, **वैश्वीकरण का सामाजिक प्रभाव**, परीक्षा मंथन, सामयिक निबंध भाग–1, मंथन प्रकाशन 7R/5, ताशकंद मार्ग, इलाहाबाद, पेज संख्या 13-14 (2006-07)।
3. अनिल अग्रवाल, **समावेशी भारत की पूर्वाभिमुख नीति**, परीक्षा मंथन, सामयिक निबंध भाग–5, मंथन प्रकाशन 7R/5, ताशकंद मार्ग, इलाहाबाद, पेज संख्या 230-241 (2010-11)।
4. अप्पादुराई, ए. (2001), **गहरी लोकतंत्र: शहरी शासन और राजनीति का क्षितिज**, पर्यावरण और शहरीकरण, 13 (2), 23–43.
5. अंजली मरार, "India Set to Man Its Arctic Base around the Year with New Expedition: Here's Why," **Indian**, 2023.
6. आचार्य, ए., और प्लेश, डी. (2020), **संयुक्त राष्ट्र: बदलती विश्व व्यवस्था का प्रबंधन और पुनर्निर्माण**, वैश्विक शासन: बहुपक्षवाद और अंतर्राष्ट्रीय संगठनों की समीक्षा, 26 (2), 221–235.
7. आनंद कुमार महाजन, अभिषेक सिंह, **सामान्य अध्ययन मुख्य परीक्षा विशेषांक–3**, यूथ कॉम्पिटिशन टाइम्स (2020-21)।
8. एलन, एस. (2019), **बादलों में आपराधिक क्षेत्राधिकार लागू करना और क्षेत्रीयता के लिए अंतर्राष्ट्रीय कानून की स्थायी प्रतिबद्धता**, ऑक्सफोर्ड हैंडबुक्स ऑनलाइन।
9. एलन, एस., कोस्टेलो, डी., फिट्ज़मौरिस, एम., ग्रैगल, पी., और गुंट्रिप, ई. (संपादक) (2019), **अंतर्राष्ट्रीय कानून में न्यायक्षेत्र की ऑक्सफोर्ड हैंडबुक**, ऑक्सफोर्ड यूनिवर्सिटी प्रेस।
10. बनिक, अरिंदन; पदोवानी, फर्नांडो, **भारत में परिवर्तन: नई अर्थव्यवस्था और संकट के परिप्रेक्ष्य के रूप में**, रेविस्टा डी सोशियोलॉजी ई पोलिटिका, वी. 22, एन. 50, 2014।
11. डॉ. एस.के. मिश्र, **समसामयिक भारत की विदेश नीति**, ऑथर प्रेस नई दिल्ली (2016)।
12. डॉ. एस.के. मिश्र, **भारतीय सुरक्षा एवं विदेश नीति**, उदय पब्लिकेशन नई दिल्ली (2018)।
13. डॉ. सतीश सिंह, "पड़ोस से रहेंगे बेहतर संबंध", **राष्ट्रीय सहारा**, 10 जनवरी 2020।
14. धनंजय त्रिपाठी, "जंग तो नहीं चाहेगा चीन", **राष्ट्रीय सहारा**, 12 जनवरी 2020।
15. गुइमारेस, सैमुअल, **डेसाफियोस ए डिलेमास डॉस ग्रांडेस पेसेस पेरिफेरिकोस: ब्राजील एंड इंडिया**, रेविस्टा ब्रासीलीरा डे पोलिटिका इंटरनेशनल, वी. 41, एन. 1, ब्रासीलिया, जनवरी/जून 1998।
16. हर्ष वी. पन्त, "नये तेवर वाली विदेश नीति", **दैनिक जागरण**, 25 जनवरी 2020।

17. इंडिया ब्रांड एंड इक्विटी फाउंडेशन, **भारत में आईटी और बीपीएम उद्योग**, 2020।
18. इंस्टिट्यूटो डी एस्टुडोस पैरा ओ डेसेनवोलविमेंटो इंडस्ट्रियल, **हे प्रोग्राम मेक इन इंडिया और आउटरास इनिसिएटिव्स डो गवर्नो इंडियनो**, 2018।
19. **मेक इन इंडिया: विजन, नई प्रक्रियाएं, क्षेत्र, बुनियादी ढांचा और मानसिकता**, 2017।
20. प्रमोद जोशी, **डिफेंस मॉनिटर**, अगस्त–सितंबर 2019, नई दिल्ली।
21. प्रियंका ककोद्कर, "India to Host 46th Antarctic Treaty Consultative Meeting," **The Times of India**, 2024.
22. पुष्पेश पन्त, **भारत की विदेश नीति**, टाटा मैकग्रॉ–हिल एजुकेशन प्रा. लि. नई दिल्ली (2010)।
23. पीएईएस, लुकास डी ओलिवेरा; कुन्हा, आंद्रे मोरेरा; फोंसेका, पेड्रो सीज़र डुट्रा, **अंतर्राष्ट्रीय संबंधों में उभरती शक्ति की अवधारणा का गठन**, रेव्ह इकोन. राजनीति. खंड 36 नंबर 1 साओ पाउलो, जनवरी/मार्च 2016।
24. टैंक, पिनार नॉर्वेजियन पीस, **बिल्डिंग रिसोर्स सेंटर नोरेफ पॉलिसी ब्रीफ "उभरती शक्तियों" की अवधारणा**, जून 2012।
25. ट्रेडिंग इकोनॉमिक्स, **भारत का जीडीपी**, 2018।
26. विश्व बैंक, **वैश्विक मूल्य श्रृंखलाएँ**।
27. विवेक काटजू, "पश्चिम एशिया में उबाल", **दैनिक जागरण**, 20 जनवरी 2020।